रात्रि क्लास 23-6-68 ओमशान्ति "अपने को आत्मा भाई2 देखो"

यह यज्ञ तो है बरोबर। और नम्बरवारपुरुषार्थ अनुसार स्वाहा होते हैं। जैसे यह सभी बच्चियां स्वाहा है ना। जीते जी स्वाहा। तन-मन-धन सब कुछ स्वाहा। उस यज्ञ में क्या2 डालते हैं। यह सभी तन-मन-धन स्वाहा। बाप भी कहते हैं विश्व की बादशाही तुम पर स्वाहा। मेहनत बच्चों को करनी होती है। फट से 16कला तो बनना मुश्किल है। अपने को आत्मा समझ भाई2 समझ फिर बाप का बन अशरीरी होकर रहना है। देह के सभी सम्बन्ध छोड़नी है। सतोप्रधान आये थे फिर सतोप्रधान होकर जाना है। सतोप्रधान भी यहां ही होना है। याद करते2 गिरे भी आते2 आये हैं। अभी फिर याद करना है। बाप को याद करना है और 84 के चक्र को भी तो तुम जानते ही हो। उन्हों ने स्वदर्शनचक्र को हिंसक रूप दे दिया है। तुम्हारा है अहिंसक। भक्ति मार्ग के शास्त्र कितने ढेर हैं। सभी शास्त्र पढ़ते भी हैं परन्तु घोर अंधयारे में। समझते नहीं इनसे मिलता क्या है। मीठे2 रूहानी बच्चे अभी निश्चयबुधि हो गये हैं। बेहद का बाप मिला है तो बेहद का वरसा अपना है। जरूर पुरुषार्थ कर उंच पद पाते हैं। कहते हैं बाबा इतना माथा मारना पड़ता है सेकण्ड में जीवन मुक्ति कहां मिलती है। बाबा कहे बाबाको पहचाना और विश्व की बादशाही। फिर उस में राजा धनी प्रजा मालिक तो कहेंगे ना। फिर जो जितना पुरुषार्थ करते हैं, बहुतों को आप समान बनाते हैं उतना ही उंच पद पावेंगे। कल्याण कारी बाप के बच्चे को भी कल्याणकारी बनना है। शरीर को भूल अपने को आत्मा समझो। फिर स्त्री पुरुष का हाथ भी पैर भी न चलेगा। अगर हाथ पैर चलाया तो हिंसा कम हो जावेगा। यह भी छोड़ो। हाथ पैर भी न चलाओ। अगर विजय माला का दाना बनना है तो। माला कल्प2 बनती रहती है। भक्तिमाल भी है ज्ञान माल भी है। भक्ति माल को फेरा नहीं जाता। बच्चों को माला को फेरा जाता है। बच्चों को पता पड़ा है किसकी माला फेरते हैं। जो फेरते हैं वह नहीं जानते हैं। जिसकी माला फेरते हैं वह जानते हैं। योग अक्षर भी भूल जाओ। बोलो बाबा आप को भूल जाते हैं। तो लज्जा आवेगी। बाप को भूलेंगे तो विश्व की बादशाही कैसे मिलेगी। बाप को भूले गोया बाप को भूले। योग अक्षर सन्यासियों का है। महतत्व से योग लगाना यह महान भूल है। ब्रह्मसे योग लगाना ही नहीं है। वह तो पतितपावन है। नहीं। यह भूल है। माया का योबहुत है। महऋषि कितना उनका है। अभी खुद कहते हैं मैं फेल हूं। करता ही रहा हूं। फेल वास्तव में तब कहा जाये याद की यात्रा में बच्चे फेल होते हैं। इससे क्या होगा पद कम। बाकी स्वर्ग में तो आवेंगे। गाया भी जाता है सेकण्ड में जीवन मुक्ति। स्वर्ग में जरूर जावेंगे बाकी पद के लिए पुरुषार्थ करना है। पवित्र बन कर ही जाना है। पवित्र सतोप्रधान थे फिर तमोप्रधान बने हो। अभी फिर पवित्र होकर जाना है। ऐसे2 विचार सागर मथन करना होता है। जो बाप समझाते हैं वह ठीक है। संगम युग पर तुमको सतोप्रधान पुरुषोत्तम बनना है। गफलत की तो कल्प-कल्पान्तर के लिए घाटा हो जावेगा। अभी तो अपना फायदा ही करना है। न कि घाटा। स्वदर्शनचक्रधारी हो रहने से बहुत फायदा होता है। हण-खाण है माया। गुलबकावली का भी इस पर खेल है। अभी तुम बच्चे कहते हो राजयोग है तो जरूरभविष्य में प्रिन्स बनेंगे ना। यह क्यों नहीं याद करना चाहिए। बाप जो स्वर्ग की स्थापना करते हैं तो बच्चे जरूर स्वर्ग के प्रिन्स बनने चाहिए ना। पुरुषार्थ करना है। सभी प्रिन्स बन जाये तो प्रजाकहां? हम बेहद के बाप के बच्चे हैं। तो प्रिन्स बनना चाहिए। फिर प्रजा भी चाहिए। अभी टाईम है। झाड़ वृधि को पाना है। बाप ब्राह्मण कुल सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी दो घराणे यहां पुरुषोत्तम संगम युग पर स्थापन करते हैं। अभी जितना जो पुरुषार्थ करे। स्टुडन्ट को समझ बाप देते रहते हैं। ऐसे स्टुडन्ट कल्प में एक ही बार बनते हैं। सतयुग में भी बाप थोड़े ही पढ़ावेंगे। पुरुषोत्तम संगम युग की बड़ी भारी महिमा है। यहां तुम बच्चे जैसे किसेफ्टी में बैठे हो। यह रूहानी कीला है। दूसरा कोई नहीं रहता। तुमको सहज है बाप को याद करना। वहां क्लास में बैठे भी पूर्णा रहेंगा। यहां पूर्णा नहीं। कोई2 की बुधि जाती है बच्चों आद तरफ। बाकी संग तो ब्राह्मणों का ही है। और कोई संग नहीं। यहां और वहां के वायुमंडल में रात दिन का फर्क है। वहां है

बगुले। यह है हंसमंडली। हंस ज्ञान के मोती चुगते हैं। यहां मांस खाने वाले कोई है नहीं। यहां वायु-मंडल बहुत ही शुध रहता है। और बच्चों को स्वतंत्रता भी है। तुम देवताओं से भी उत्तम हो। क्योंकि ईश्वरीय परिवार के हो। तो कितना नशा होना चाहिए। फिर देवी परिवार क्षत्री परिवार, वैश्य शुद्र परिवार में जावेंगे फिर ब्राहमण परिवार में आवेंगे। यह चक्र= चक्र बहुत ही अच्छा है बाजेली का चक्र है। यह काड़व सराकार की पढ़ाई यह पाण्डव सरकार की पढ़ाई कितना फर्क है। बाप कहते है हिम्मत कर फिर इन बच्चों को भी इसमें लगाओ। कुमारियों को उठाओ। बचाना है विषय वैतरणी नदी से। अच्छा बच्चों को गुडनाईट और नमस्ते।

रात्रि क्लास 24-6-68 :- अभी यह है रूहानी पाठशाला। है तो पाण्डव गवर्मेन्ट। परन्तु रावण राज्य के मनुष्य समझेंगे नहीं। पाण्डव गवर्मेन्ट और कोड़व गवर्मेन्ट नाम तो है जरूर। स्प्रीचुअल म्युजियम वा युनिवर्सिटी भी लिख सकते हो। उस कालेज वा युनिवर्सिटी में ए बी सी डी पढ़ते हैं। यह है पुरुषोत्तम संगम युग। विचार हो रहा है पाण्डव गवर्मेन्ट को भी युनिवर्सिटी होनी चाहिए। सुनते तो सभी हैं। परन्तु जब बुधि में बैठे। पाठशाला तो खुलती ही रहता है। क्योंकि वह है जिसमानी गीता। रूहानी गीता तो है नहीं। इसमें कैरेक्टर्स दैवी होती है। उस कालेज आद में तो कोई का दैवी कैरेक्टर्स आद हो न सके। असम्भव है। तो विचार है नाम ऐसा हो जो समझे बच्चों की दैवी कैरेक्टर्स बनाई जाती है। बच्चों को नशा भी चढ़े। ऐसी जरूरी खुलनी चाहिए। बहुत बच्चियां निकलेंगी। फिर न चले तो रवाना कर देंगे। बच्चों में कैरेक्टर्स झट आती है। तो इसका नाम कुछ और रखें। स्प्रीचुअल कालेज नाम रखें। भारत में यह कोई नहीं जानते हैं स्प्रीचुअल किसको कहा जाता है। स्प्रीचुअल फादर ही रूहों को नालेज देते हैं। वह मनुष्य मनुष्य को ही देते हैं। यहां है स्प्रीचुअल फादर। जो रूहों को नालेज देते हैं। तो बाबा का विचार है दो कुमारियों को कालेज हो। तो एक कुमारों का भी हो। बच्चों को सुधारना जरा मुश्किल है। बच्चियां ही तंग होकर पुकारती है नंगन होने से बचाओ। निर्लज्ज पुरुष ही बनते हैं। पूरा समझते नहीं हैं भगवानुवाचः काम महाशत्रु है। इन पर जीत पाने से जगत जीत बनेंगे। इनका अर्थ और समझते नहीं। यह दुनिया है ही कोस घर। बच्चों को कोस कराते रहते हैं। वह कहते हैं गऊ कोस न हो। वास्तव में है यह कोस बन्द करने का। सारी दुनिया में माया का राज्य है। कोस घर है। सतयुग में कोई काम कटारी नहीं चलाते। यहां तो पापात्मा ही बन पड़े हैं। बाप को तरस पड़ता है। बाप तो जानते हैं ना यह कोस घर है। अभी तुम हो पुरुषोत्तम संगम युग पर। जब कि दुनिया ही बदलती है। आत्मा सुनती है बाप शरीर द्वारा समझाते हैं। देवीचरित्र बनाते हैं। तो हमारी यह स्प्रीचुअल कालेज है। जिसके आसुरी गुणों से दैवी गुण हो जाते हैं। स्प्रीचुअल फादर स्प्रीचुअल नालेज दे रहे है। हमको कोई मनुष्य नहीं पढ़ाते हैं। स्प्रीचुअल फादर वा स्प्रीचुअल ब्रदर्स पढ़ाते हैं। तो क्या करना चाहिए। खास देहली में जगह तो बहुत ढूढ़ते हैं। विकारियों से बगुलों से दूर हो। वास भी न हो विकार की। मदद करने वाला तो बाप बैठा है। हिम्मते मरदा ... तो कोशिश कर के कोस होने वाले बच्चियों को बचाना चाहिए। बच्चों को अलग, बच्चियों को अलग। माया है ना। कशिश ऐसे करते हैं बात मत पूछो। बाप कहते हैं बच्चे देही अभिमानी भव। तो कशिश न होगी। मेल मेल भी गन्दे हो जाते हैं। इतनी कशिश होती है। अन्त में कालीदह का सिमरण आया तो बहुत सजा खावेंगे। बाप तो अच्छी रीत समझाते हैं। जाना है तो सतोप्रधान होकर जाना है। खामी होगी तो सजा भी खावेंगे। पास विथ आनर सिर्फ 6 होते हैं। बाकी तो सभी सजा खाते हैं। मोचरा और मानी। तो बाप समझाते हैं जितना जल्दी हो सके जल्दी स्प्रीचुअल कालेज खुल जाये। तो कैरेक्टर्स इनकी और उनकी देखेंगे तो रात दिन का फर्क। आसुरी गुणों से दैवी गुणों में भेंट किया जाता है। विकार की बात ही नहीं। तो ऐसे तैयार भी होंगे और जल्दी। पहले घेरा देहली में। बच्चों में हिम्मत न है पैसा खर्च करने की तो बाप बैठे हैं। ज्ञान लेने वाले समझ जाते हैं आठ बर्ष में सभी मिट्टी में मिल जानी है। इससे तो ट्रन्सफर कर देंगे। बाबा लिखते भी हैं ईश्वरीय बैंक में जमा हुआ तो

तुम पद्मा-पदमपति बनते हो। बाकी सभी हाथ खाली जाते हैं। बाप के बच्चों के हाथ भरतू जाते हैं। ईश्वरीय बैंक में जमा हुआ तो पदमापदमभाग्यशाली बनते हो। तुम विश्व के मालिक बनते हो। गीत है ना बाबा आप ने तो सभी कुछ दे दिया। अभी तो पानी के लिए भी लड़ते रहते हैं। बाप कहते हैं तुमको बेहद की बादशाही दी फिर तुम गुरुओं के मत पर कितनी गाली देते हो। कितनी ग्लानी की है। गुरुओं को पैसे दे खाली हो पड़े हो। अभी फिर तुमको सभी कुछ मिलना है। तुम जानते हो विश्व का मालिक बनाने लिए बाप आये हैं। कल्प2 बाप आकर विश्व का मालिक बनाते हैं। तो तुमको कितनी खुशी होनी चाहिए। बेहद का बाप 5000 वर्ष पहले भी आया था। शिव-जयन्ति भी मनाते हैं। क्या किया है वह जानते ही नहीं। होलीडे भी नहीं करते हैं। शिव को तो सभी पुकारते हैं ओ गाड फादर लिबरेट करो। गाईड बन ले चलो। परंतु विचारों को पता ही नहीं है। तुम किसको भी ज्ञान दे सकते हो यह पुरानी दुनिया विकारी डैविल राज्य है। हैल है। पैराडाईज था जरूर। अभी बाप को याद करने से तुम घर पहुंच जावेंगे। और जास्ती कुछ भी बतलाने की दरकार ही नहीं। सुप्रीम फादर एक ही है। वह कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप भस्म हो जावेंगे। तुम पावन बन स्वीटहोम चले जावेंगे। सारी ज्ञान का तन्त यह है। गीता में भी आदि और अन्त में है मन्मनाभव। बाकी बीच में नालेज मिलती है। बच्चों को आत्माअभिमानी बनने बहुत मेहनत करनी है। बड़ी भारी सबजेक्ट है। बाप को याद नहीं कर सकते हो तो। आगे याद करते थे देह अभिमानी से। अभी आत्माभिमानी हो याद करना है। तो तुम घड़ी घड़ी भूल जाते हो। ईश्वरीय कार्य में देरी नहीं करनी है। बहुत काम तुम बच्चों को करना है। जितना हो सके बाप को याद कर और बाप के अर्थ सर्विस करते रहो। बाप तो ललकार करेंगे जल्दी राजधानी स्थापन करनी है। देह अभिमानियों से अपना सम्बन्ध तोड़ते जाओ। बहुतों का कल्याण करना है। एक के लिए नहीं ठहरना है। सन्यासी चले जाते हैं फिर कोई क्या करते। तुम भी अलौकिक सर्विस में अपने को जुड़ाते जाओ। तब ही ऊंच पद पा सकते हो। मेहनत चाहिए। सर्विस में दधिची ऋषि मिशलहड्डियां देनी है। राजाई भी तुमको मिलती है। बाप सिर्फ युक्ति बतलाते हैं। अपने को राजतिलक दे कैसे । दे सकते हैं। तुम ब्राह्मणों के कान ही सुनते हैं। सर्विस सर्विस और सर्विस। नहीं तो फिर पछताना पड़ेगा। भक्ति मार्ग में तो झूठ ही कथाएं सुनते गिरते आये हैं। अभी बाप सच्ची कथा सुनाते हैं तो अमल करना चाहिए उस पर। महारथी बच्चों को बुधि में रखना है। जो करते हैं वही महारथी। सर्विस का सबूत देना है। कुमारियों को बचाना है। अच्छा बच्चों को याद प्यार गुडनाईट और नमस्ते।

रात्रि क्लास 25-6-68

बच्चों को आस्ते2 यह समझ में आता जाता है दो गवर्मेन्ट है। पाण्डव गवर्मेन्ट और कौरव गवर्मेन्ट। है मुख्य बात पढ़ाई की। सभी जानते हैं कि भारत के बच्चों का कैरेक्टर्स बिगड़ा हुआ है। तुम भी कह सकते हो। यह पतित दुनिया है। पतित दुनिया में सभी मनुष्य मात्र का कैरेक्टर्स खराब है। क्योंकि पतित विकारी हैं। यह कैरेक्टर्स बहुत खराब है। निर्विकारी बनना बहुत अच्छा कैरेक्टर्स है। पवित्र निर्विकारी तो बनते हैं उनकी सभी महिमा भी करते हैं। बच्चे भी जानते हैं बाप आकर स्प्रीचुअल कालेज अथवा पाठशाला खोली है। पाठशाला अक्षर कुछ छोटा है। कालेज बड़ा है। युनिवर्सिटी तो इन से भी बड़ा। समझते नहीं हैं। नाम रख दिया है। नहीं तो युनिवर्सिटी सिवाय बाप के कोई खोलते नहीं। भारत में ही आकर बाप युनिवर्सिटी खोलते हैं। युनिवर्स के पढ़ने लिए युनिवर्सिटी। सो तो बाप के सिवाय कोई खोल न सके। बाप समझते हैं यह नाम रख दिये हैं। और वहां युनिवर्सिटी में कैरेक्टर्स बिगड़ता है। क्योंकि वहां इकट्ठे पढ़ते हैं बच्चे और बच्चियां। तुम जानते हो युनिवर्सिटी के लिए अखबार में पड़ता है। कुमार-कुमारियों की चाल तो सुधर न सके। तुम जानते हो यह स्प्रीचुअल युनिवर्सिटी है। नशा चढ़ना चाहिए। युनिवर्सिटी नाम लिखते

हैं तो मूर्ख लोग नाम रखने नहीं देते हैं। सभी आफिसर के बुधि में अपनी होती है। अभी तुम सिध कर समझा समझा सकते हो। युनिवर्स का कैरेक्टर्स सुधारना तो बाप का ही काम है। इस समय सारी युनिवर्स पतित कैरेक्टर्स-लेस है। बाप देखो कैसा अच्छा कैरेक्टर्स वाला बनाते हैं। देवताओं की महिमा गाते हैं ना। सर्वगुण सम्पन्न ·· समझाने की युक्ति चाहिए और योग की विल पावर भी चाहिए। एजुकेशन वाले कोसमझाओ तो तुम्हारा रांग अक्षर है। सारी सृष्टि के लिये युनिवर्सिटी तो बाप ही खोलते हैं। जो दुनिया को ही बदल देते हैं। स्प्रीचुअल युनिवर्सिटी। सिटी। नीचे में लिख दो। ऊपर भल ईश्वरीय विश्व विद्यालय लिखो। युक्ति से लिखना है। उनकी जहां युनिवर्सिटी कालेज हो ठीक उनके ही नजदीक में तुम अपना कालेज खोलो। जैसे बाबा कलकत्ते वालों को लिखा था। जहां राम कृष्ण के मठ हैं वहां बगल में तुम अपना सेन्टर खोलो। भल वह सन्यासी है। ब्रह्मा को मानने वाले हैं। बाप कहते सभी धर्म वाले को तुम नालेज दे सकते हो। कृष्ण को तो कोई भी भगवान नहीं मानते भगवान एक ही है। वह बाप टीचर, सर्व का सदगति दाता सदगुरु भी है। सतयुग में तो बहुत ही थोड़े होते हैं। कलियुग में इतने ढेर हैं तो कौन उन्हों को सद्गति सदगति देते। यह बाप का ही काम है। परन्तु सन्यासियों के समझने का अभी टाईम नहीं है। पिछाड़ी में उन्हों का समय है। नहीं तो रेवलेशन हो जाये।

तो बाप कहते हैं मीठे2 बच्चों जो सर्वेन्ट एबुल हैं जिनका दिमाग है। बाबा चैलेंज देते हैं जाओ। तीन-चार ऐसी कालेज खोलो। बच्चियां तो तुमको 500 मिल सकता है। कालेज में एक एक क्लास में 25-30 होते हैं। तुम फिर यह स्प्रीचुअल कालेज खोलो। यह देखेंगे नई बात। भगवान आकर पढ़ाते हैं। भगवानुवाचः मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूं। राजाओं का राज्य भारत में था पवित्र थे। बच्चों को समझाया गया है सतयुग में राजाई थी। जरूर संगम पर ही प्राप्त किया होगा। शुभ कार्य में देरी नहीं करनी चाहिए। घुटके नहीं खानी चाहिए। बाबा ने कहा और अमल में लाया। रूहानी बाप है ना। फौरन प्रबन्ध करना चाहिए। हरेक कमरे में चित्र हो। चित्र भी 6×4 की हो। छोटे नहीं। भल 8 चित्र हों। नक्शे तो बड़े ही होते हैं ना। यह भी बड़े ही होनी चाहिए। कपड़े पर भी अगर बन सकते हैं तो भल बनाओ। इससे बहुत सर्विस हो सकती है। शुभ कार्य में देरी नहीं करनी चाहिए। पहले2 देहली में पर घराव डालना है। देहली पर बहुतों ने चढ़ाई की है। देहली में सभी जगह से आते हैं। तो तुम्हारी कालेज भी पहले देहली में होनी चाहिए। चित्र भी बहुत चाहिए। तुम बच्चियों का तो नाम बाला होना ही है। यह नई दुनिया आत्माओं के लिए नई बात। यह मृत्युलोक है। अकाले मृत्यु होती रहती है। हम श्रीमत पर फिर से राजधानी स्थापन कर रहे हैं। अकाले मृत्यु नहीं। फिर से ड्रामा अनुसार भारत परहम यह राज्य स्थापन कर रहे हैं। बच्चियां तो बहुत ही है। पहले देहली में बनाओ। भगवानुवाच है ना। पुरुषार्थ करके दिखाना चाहिए। बाबा तो पुरुषार्थ कराते हैं होता ड्रामा अनुसार ही है। समझाता हूं टाईम लगेगा। परन्तु शुभ कार्य में देरी नहीं करनी चाहिए। इसलिए जोर देता हूं। बच्चे भी बहुत हैं जो कालेज के शौकीन हैं। जो आवे उनको समझाते रहे तो तुम्हारा नाम निकलेगा। यहां प्रदर्शनी में तुम लिख सकते हो कितने आते हैं। पायन्टस तो दिन-प्रति-दिन बहुत मिलती रहती है। तुम्हारा नाम सुधरता जाता है। गालियां तो यह खाते हैं। जो कब भी गाली नहीं खाते थे वह अनायास ही शिवबाबा का रथ बनने से कितनी गाली खाते हैं। ब्रह्मा का चित्र देख कर ही सभी का माथा खराब होता है। यह भी खेल है ना। कल्प पहले भी हुआ था। नई बात नहीं है। तो देहली में स्प्रीचुअल कालेज खोलने की कोशिश करो। बाबा कहते हैं मदद मिल जावेगी। हिम्मते बच्चे मददे बाप। आते2 कर पाण्डव गवर्मेन्ट नाम भी निकलना है। गीता में है दोनों गवर्मेन्ट का नाम। दोनों है बिगड़ जब ताज। तो बच्चों को नशा रहना चाहिए। लूट दो माल ले लिया। बच्चियों को मंगाये लिया। नालेज कोई कठीन थोड़े ही है। अपनी गवर्मेन्ट स्थापन करने का फिक्र बहुत2 बच्चों में चाहिए। विश्व में राज्य स्थापन करते हैं। कमाल है। मददगार कौन ? भगवान। अच्छा बच्चों को गुडनाईट और नमस्ते।